आड़ा वक़्त

उपन्यास

राजनारायण बोहरे

राजनारायण बोहरे

जन्म : 20 सितंबर को अशोकनगर मध्यप्रदेश में हुआ।

इनके अब तक चार कहानी संग्रह इज्जत–आबरू, गोस्टा तथा अन्य कहानियाँ, हादसा, मेरी प्रिय कथाएँ और उपन्यास 'मुखबिर' व 'अस्थान' के अलावा बाली का बेटा, अंतरिक्ष में डायनासोर, रानी का प्रेत, गढ़ी के प्रेत, जादूगर जँकाल और सोनपरी (बाल उपन्यास) के साथ आर्यावर्त की रोचक कहानियाँ प्रकाशित हैं। इनके कथा साहित्य पर समीक्षा–आलोचना पुस्तक "राजनारायण बोहरे : आलोचना की अदालत" (सम्पादक–डॉ. के बी एल पाण्डेय) है। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, अ.भा. कहानी प्रतियोगिता सारिका (84) और जान्हवी (97) द्वारा पुरस्कृत।

पोर्टल मातृभारती, प्रतिलिपि, शोपिजेन, स्टोरी मिरर, ई–पुस्तकालय पर कहानी।

पुरस्कार : म. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का "वागीश्वरी पुरस्कार" एवं साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश का "सुभद्राकुमारी चौहान पुरस्कार" तथा कहानी "भय" के लिए माननीय प्रधानमंत्री से पुरस्कृत।

राज बोहरे का Blog "raj bohare uvach" व "kissago rajnarayan" है

तो youtube.com/user/rajbohare इनका यूट्यूब चैनल है।

anchor.fm/raj-bohare उनका स्पॉटीफाई पॉडकास्ट है।

सम्पर्क : एल–19, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, बस स्टैण्ड, दतिया मध्यप्रदेश–475661

मो. : 98266-89939

E-mail : raj.bohare@gmail.com

₹ 280.00

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

नई दिल्ली

फोन : 99682-88050, 99118-66239

ISBN 978-93-93091-27-7

आड़ा वक़्त

आड़ा वक़्त

(उपन्यास)

राजनारायण बोहरे

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-27-7
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेलः littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022
© राजनारायण बोहरे
मूल्य : ₹ 280/-

आवरण कलाकृति : बंशीलाल परमार
लेज़र कम्पोजिंग : लिटिल बर्ड, नई दिल्ली
मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्स, दिल्ली

AADA WAQT
by RAJ NARAYAN BOHRE

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पण

कथाकार महेश कटारे
और
जनवादी बुन्देली ग़ज़लगो महेश कटारे
'सुगम'
के लिए

जंगल

स्वरूप की नींद खुली तो उन्होंने बाँये हाथ तरफ की टीवार पर टँगी घड़ी पर नजर दौड़ाई।

सुबह के आठ बज गए थे।

'अरे आज तो बहुत देर तक सो लिए!' वे मन ही मन चौंके।

अगर दादा के साथ होते हैं तो वह प्रायः सात बजे तक उठ जाते हैं।

स्वरूप ने पास के बिस्तर पर नजर फेंकी, दादा का बिस्तर खाली था। दादा तो बारहों महीने सुबह पाँच बजे ही बिस्तर छोड़ते हैं सदा, घर हों या बाहर! जाने कब के उठ गए होंगे और बैठे-बैठे झींक रहे होंगे कि स्वरूप अब तक नहीं जगा। स्वरूप जल्दी से उठे, पाँव में हवाई चप्पल डाली और कमरे से निकल कर रेस्ट हाउस के बरामदे में चले आये।

बरामदे की कुर्सी खाली थी। स्वरूप का माथा ठनका—दादा को यही तो बैठना था। कहाँ गए होंगे? अनजान इलाका, अजनबी भाषा।

सहसा याद आया... कुछ मिलने वाले तो दबे जुबान से यह भी कह रहे थे कि इस आदिवासी इलाके में भी नक्सली गतिविधियाँ चल रही हैं, हर सरकारी कर्मचारी को संभल कर रहना चाहिए। स्वरूप को चिंता हुई। दादा खुद भले सरकारी कर्मचारी नहीं, लेकिन इस इलाके में खतरे से बाहर तो नहीं हैं। आखिरकार वे एक सरकारी कर्मचारी के भाई हैं तो हैं।

...दादा एक ठेठ किसान है, रहन-सहन से भी और मन-विचार से भी। गेंहुआ रंग, चपल आँखें और लम्बी नासिका के नीचे नोकदार मूँछ रखने के शौकीन हट्टे-कट्टे बदन वाले दादा का छह फुट से लम्बा कद है। खूब उजला धोती-कुर्ता का बाना पहनते हैं, मालवा-बुन्देलखण्ड की मिली-जुली बोली-बानी के दादा न अंग्रेजी जानते हैं न यहाँ की छत्तीसगड़ी।